नीतू कुमारी , वर्ग -तृतीय, विषय- हिंदी, दिनांक-10-05-2021

एन.सी.ईआर.टी पर आधारित

सुप्रभात बच्चों,

बच्चों पिछले कक्षा में आपने पाठ-2 का शब्दार्थ अध्ययन किए, आज की कक्षा में आप उसी पाठ का कहानी अध्ययन करेंगे जो कि इस प्रकार है-

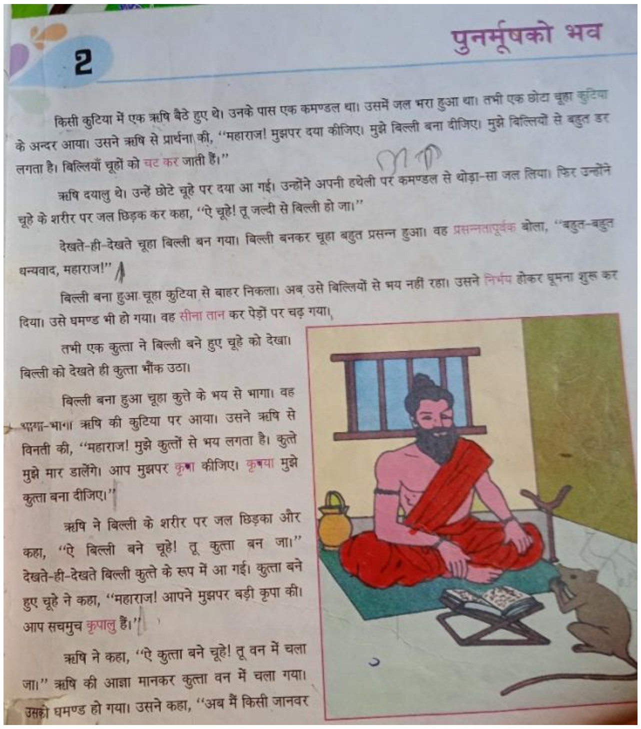

2

पुनर्मूषको भव

किसी कुटिया में एक ऋषि बैठे हुए थे। उनके पास एक कमण्डल था। उसमें जल भरा हुआ था। तभी एक छोटा चूहा कुटिया के अन्दर आया। उसने ऋषि से प्रार्थना की, ''महाराज! मुझपर दया कीजिए। मुझे बिल्ली बना दीजिए। मुझे बिल्लियों से बहुत डर लगता है। बिल्लियाँ चूहों को चट कर जाती हैं।''

ऋषि दयालु थे। उन्हें छोटे चूहे पर दया आ गई। उन्होंने अपनी हथेली पर कमण्डल से थोड़ा-सा जल लिया। फिर उन्होंने चूहे के शरीर पर जल छिड़क कर कहा, ''ऐ चूहे! तू जल्दी से बिल्ली हो जा।''

देखते-ही-देखते चूहा बिल्ली बन गया। बिल्ली बनकर चूहा बहुत प्रसन्न हुआ। वह प्रसन्नतापूर्वक बोला, ''बहुत-बहुत धन्यवाद, महाराज!''

बिल्ली बना हुआ चूहा कुटिया से बाहर निकला। अब उसे बिल्लियों से भय नहीं रहा। उसने निर्भय होकर घूमना शुरू कर दिया। उसे घमण्ड भी हो गया। वह सीना तान कर पेड़ों पर चढ़ गया।

तभी एक कुत्ता ने बिल्ली बने हुए चूहे को देखा। बिल्ली को देखते ही कुत्ता भौंक उठा।

बिल्ली बना हुआ चूहा कुत्ते के भय से भागा। वह भागा-भागा ऋषि की कुटिया पर आया। उसने ऋषि से विनती की, ''महाराज! मुझे कुत्तों से भय लगता है। कुत्ते मुझे मार डालेंगे। आप मुझपर कृपा कीजिए। कृपया मुझे कुत्ता बना दीजिए।''

ऋषि ने बिल्ली के शरीर पर जल छिड़का और कहा, ''ऐ बिल्ली बने चूहे! तू कुत्ता बन जा।'' देखते-ही-देखते बिल्ली कुत्ते के रूप में आ गई। कुत्ता बने हुए चूहे ने कहा, ''महाराज! आपने मुझपर बड़ी कृपा की। आप सचमुच कृपालु हैं।''

ऋषि ने कहा, ''ऐ कुत्ता बने चूहे! तू वन में चला जा।'' ऋषि की आज्ञा मानकर कुत्ता वन में चला गया। उसको घमण्ड हो गया। उसने कहा, ''अब मैं किसी जानवर

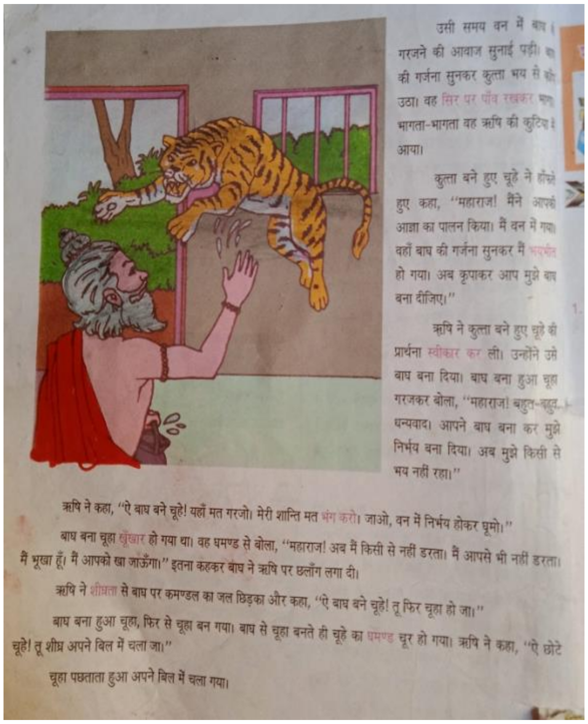

उसी समय वन में बा
गरजने की आवाज सुनाई पड़ी। बा
की गर्जना सुनकर कुत्ता भय से काँ
उठा। वह सिर पर पाँव रखकर भा
भागता-भागता वह ऋषि की कुटिया
आया।

कुत्ता बने हुए चूहे ने हाँफ
हुए कहा, ''महाराज! मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया। मैं वन में गया। वहाँ बाघ की गर्जना सुनकर मैं भयभीत हो गया। अब कृपाकर आप मुझे बाघ बना दीजिए।''

ऋषि ने कुत्ता बने हुए चूहे की प्रार्थना स्वीकार कर ली। उन्होंने उसे बाघ बना दिया। बाघ बना हुआ चूहा गरजकर बोला, ''महाराज! बहुत-बहुत धन्यवाद। आपने बाघ बना कर मुझे निर्भय बना दिया। अब मुझे किसी से भय नहीं रहा।''

ऋषि ने कहा, ''ऐ बाघ बने चूहे! यहाँ मत गरजो। मेरी शान्ति मत भंग करो। जाओ, वन में निर्भय होकर घूमो।''

बाघ बना चूहा खूँखार हो गया था। वह घमण्ड से बोला, ''महाराज! अब मैं किसी से नहीं डरता। मैं आपसे भी नहीं डरता। मैं भूखा हूँ। मैं आपको खा जाऊँगा।'' इतना कहकर बाघ ने ऋषि पर छलाँग लगा दी।

ऋषि ने शीघ्रता से बाघ पर कमण्डल का जल छिड़का और कहा, ''ऐ बाघ बने चूहे! तू फिर चूहा हो जा।''

बाघ बना हुआ चूहा, फिर से चूहा बन गया। बाघ से चूहा बनते ही चूहे का घमण्ड चूर हो गया। ऋषि ने कहा, ''ऐ छोटे चूहे! तू शीघ्र अपने बिल में चला जा।''

चूहा पछताता हुआ अपने बिल में चला गया।

बच्चों ,दिए गए कहानी पढ़ें तथा समझने का प्रयास करें।